

दीपोत्सव का पर्व आज दीपो और रंगबिरंगी रोशनी से जगमग होगा घर आंगन

अजमेर, (निस)। रोशनी और उमंग दीपों का पर्व दीपावली गुरुवार को धूमधाम मनाया जाएगा घर-आंगन झालरों से सज गये हैं। बाजार भी दुल्हन की तरफ सेवन जरज आ रहे हैं। उन लक्ष्मी पूजन की तैयारी है। घरों में शुभ मुहूर्त में लक्ष्मी का पूजन होगा।

जिले भर में दीप पर्व हॉल्लास के साथ पर्व मनाया जाएगा, जिसकी तैयारियां घरों में गड़ी संधा ही बाजारों में उपकरण खरीदारी हुई बुधवार सुबह से लेकर देर शाम तक बाजारों में खरीदारों की भीड़ जुटी रही। छोटी दिवाली की शाम को घरों को रंग-बिरंगी झालरों से सजाया गया। अब गुरुवार को दीपावली के शुभ मुहूर्त पर ग्रामीणों और कुबेर की पूजा होगी। खुशियों की रोशनी से हर घर और आंगन जगमगएगा। दीपावली के दिन लक्ष्मी-गणेश की पूजा होती है। हर घर-बिरामी, दुकान और प्रतिष्ठान में लक्ष्मी जी के पूजन से उक्ता क्षमता किया जाता है।



रोशनी और उमंग दीपों का पर्व दीपावली गुरुवार को धूमधाम मनाया जाएगा।

तैयारी:

दीपावली पर्व संध्या पर तामीर क्षेत्र में लोग कच्चे घरों को संवारने में जुटे हैं। अपीली तामीर क्षेत्रों में गोबर, पौली मिठी, गोरे लीप कर घरों की सार संभाल की जाती है। कच्चे घरों में मिट्टी

लगाकर गोबर का लेप किया जाता है।

समय के साथ बदलते परिवेश में इसका मिलना थोड़ा मुश्किल हो गया है।

तामीर परिवेश में भारतीय संस्कृति का

परम्परा के आधार पर दीपावली पर्व के

दीरान घर को सजाने के लिए घर के

मुहूर्त:

अंगन में महिलाएं सफेदी से घरों के

आंगन में चाक, फूल पत्ती व कलश आदि बनाकर कई तरह की आकर्षक

मांडना से सजाया गया।

दीपावली लक्ष्मी पूजन का शुभ

मुहूर्त:

वैदिक पंचांग के मूलाबिक 31 अक्टूबर कार्तिक मास की अमावस्या तिथि 31 तारीख को दोपहर 3 बजकर 22 मिनट से शुक्र हो रही है और यह तिथि 01 नवंबर को शाम 5 बजकर 23 मिनट पर समाप्त हो जाएगी।

माता लक्ष्मी अमावस्या तिथि में प्रदोष काल और निशिथ काल में ग्रमण करती है। इसके काल माता की पूजा प्रदोष काल और निशिथ काल में करने का विधान होता है।

पंचांग के मूलाबिक 31 अक्टूबर

गुरुवार के दिन गूरी राति अमावस्या तिथि

के साथ प्रदोष काल और निशिथ मुहूर्त काल भी है। ऐसे में शास्त्रों में अनुसार

31 अक्टूबर के दिन दीपावली का पर्व

और लक्ष्मी पूजन करना सबसे अधिक

फलदाहि होगा, क्योंकि दिवाली का पर्व

तभी मनाना उत्तम रहता है जब प्रदोष से

लेकर निशिथ काल तक अमावस्या

तिथि रहे।

पंचांग के मूलाबिक 31 अक्टूबर

गुरुवार के दिन गूरी राति अमावस्या तिथि

के साथ प्रदोष काल और निशिथ मुहूर्त काल भी है। ऐसे में शास्त्रों में अनुसार

31 अक्टूबर के दिन दीपावली का पर्व

और लक्ष्मी पूजन करना सबसे अधिक

फलदाहि होगा, क्योंकि दिवाली का पर्व

तभी मनाना उत्तम रहता है जब प्रदोष से

लेकर निशिथ काल तक अमावस्या

तिथि रहे।

पंचांग के मूलाबिक 31 अक्टूबर

गुरुवार के दिन गूरी राति अमावस्या तिथि

के साथ प्रदोष काल और निशिथ मुहूर्त काल भी है। ऐसे में शास्त्रों में अनुसार

31 अक्टूबर के दिन दीपावली का पर्व

और लक्ष्मी पूजन करना सबसे अधिक

फलदाहि होगा, क्योंकि दिवाली का पर्व

तभी मनाना उत्तम रहता है जब प्रदोष से

लेकर निशिथ काल तक अमावस्या

तिथि रहे।

पंचांग के मूलाबिक 31 अक्टूबर

गुरुवार के दिन गूरी राति अमावस्या तिथि

के साथ प्रदोष काल और निशिथ मुहूर्त काल भी है। ऐसे में शास्त्रों में अनुसार

31 अक्टूबर के दिन दीपावली का पर्व

और लक्ष्मी पूजन करना सबसे अधिक

फलदाहि होगा, क्योंकि दिवाली का पर्व

तभी मनाना उत्तम रहता है जब प्रदोष से

लेकर निशिथ काल तक अमावस्या

तिथि रहे।

पंचांग के मूलाबिक 31 अक्टूबर

गुरुवार के दिन गूरी राति अमावस्या तिथि

के साथ प्रदोष काल और निशिथ मुहूर्त काल भी है। ऐसे में शास्त्रों में अनुसार

31 अक्टूबर के दिन दीपावली का पर्व

और लक्ष्मी पूजन करना सबसे अधिक

फलदाहि होगा, क्योंकि दिवाली का पर्व

तभी मनाना उत्तम रहता है जब प्रदोष से

लेकर निशिथ काल तक अमावस्या

तिथि रहे।

पंचांग के मूलाबिक 31 अक्टूबर

गुरुवार के दिन गूरी राति अमावस्या तिथि

के साथ प्रदोष काल और निशिथ मुहूर्त काल भी है। ऐसे में शास्त्रों में अनुसार

31 अक्टूबर के दिन दीपावली का पर्व

और लक्ष्मी पूजन करना सबसे अधिक

फलदाहि होगा, क्योंकि दिवाली का पर्व

तभी मनाना उत्तम रहता है जब प्रदोष से

लेकर निशिथ काल तक अमावस्या

तिथि रहे।

पंचांग के मूलाबिक 31 अक्टूबर

गुरुवार के दिन गूरी राति अमावस्या तिथि

के साथ प्रदोष काल और निशिथ मुहूर्त काल भी है। ऐसे में शास्त्रों में अनुसार

31 अक्टूबर के दिन दीपावली का पर्व

और लक्ष्मी पूजन करना सबसे अधिक

फलदाहि होगा, क्योंकि दिवाली का पर्व

तभी मनाना उत्तम रहता है जब प्रदोष से

लेकर निशिथ काल तक अमावस्या

तिथि रहे।

पंचांग के मूलाबिक 31 अक्टूबर

गुरुवार के दिन गूरी राति अमावस्या तिथि

के साथ प्रदोष काल और निशिथ मुहूर्त काल भी है। ऐसे में शास्त्रों में अनुसार

31 अक्टूबर के दिन दीपावली का पर्व

और लक्ष्मी पूजन करना सबसे अधिक

फलदाहि होगा, क्योंकि दिवाली का पर्व

तभी मनाना उत्तम रहता है जब प्रदोष से

लेकर निशिथ काल तक अमावस्या

तिथि रहे।

पंचांग के मूलाबिक 31 अक्टूबर

गुरुवार के दिन गूरी राति अमावस्या तिथि

के साथ प्रदोष काल और निशिथ मुहूर्त काल भी है। ऐसे में शास्त्रों में अनुसार

31 अक्टूबर के दिन दीपावली का पर्व

और लक्ष्मी पूजन करना सबसे अधिक

फलदाहि होगा, क्योंकि दिवाली का पर्व

तभी मनाना उत्तम रहता है जब प्रदोष से

लेकर निशिथ काल तक अमावस्या